International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 4, July-August, 2020, Impact Factor: 5.246

गंगा का धार्मिक महत्व

डॉ रेशू चौहान

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी–विभाग, जैन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुजफ्फरनगर उ. प्र.) भारत।

सारांश –

*सनातन धर्म में प्राचीन काल से ही **गंगा** को कल्याणकारी, मोक्षदायिनी, कष्टनिवारिणी देवनदी के रूप में ख्याति प्राप्त है। भगवान शिव द्वारा पूजित परमेश्वरी मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण राजा भागीरथ के पूर्वजों समेत संसार के सभी प्राणियों के हितार्थ हुआ था। इसके पवित्रजल को धार्मिक अनुष्ठानों एवं औषधियों के रूप में प्रयोग करना हमारी धार्मिक आस्था का विषय है। धार्मिक मान्यता है कि एकमात्र गंगास्नान से ही व्यक्ति को समस्त तीर्थों के स्नान का पुण्य फल प्राप्त होता है। देवनदी गंगा की पवित्रता एवं महत्ता का वर्णन अनेक पौराणिक, धार्मिक शास्त्रों, किवदंतियों तथा कथाओं में लक्षित हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में गंगा नदी की इन्हीं धार्मिक आस्थाओं एवं महत्ता का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।*

बीज शब्द: *भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म, गंगाजल, आस्था, गंगोत्री , गोमुख, कल्याणकारी, अनुष्ठान, श्रद्धा, भक्ति, जीवनदान, पर्यावरण, उत्सव, पर्व, गंगा दशहरा, पुराण, भागीरथ, हिमालय, तप, ध्यान, पूजा, महाकुंभ, स्नान, पापमोचनी आदि ।*

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आदिकाल से ही गंगा न केवल भारत की सर्वाधिक महान एवं पवित्र नदी के रूप में लक्षित है, अपितु विश्व की सर्वश्रेष्ठ महानदियों में अपने अनेक विशिष्ट गुणों के कारण मां के रूप में पूजित परमेश्वरी है। ***'मकर'*** पर विराजमान मां गंगा के प्रति जनमानस की विशेष आस्था व लगाव है । इसे केवल जल का स्रोत मात्र मानकर ही नहीं अपितु साक्षात् देवी के रूप में पूजा जाता है, ***'गंगे तव दर्शनात मुक्ति।'*** [1] गंगा सबके लिए पवित्र नदी है। भारत में कोई भी व्यक्ति कहीं भी स्नान करते समय अनायास ही ***'हर– हर गंगे, जय मां गंगे'*** का उच्चारण करने लगता है। अपनी पवित्रता के कारण ही गंगा सभी नदियों का प्रतिनिधित्व कर लेती है, यहां तक कि यदि किसी नदी को दिव्यता प्रदान करनी हो तो उसे गंगा कहकर संबोधित किया जाता रहा है। गंगा माता सबके लिए पुण्य दायिनी है। वेदों और पुराणों में गंगा

माता को बारम्बार तीर्थमयी कहा गया है– ***'सर्व तीर्थमयी गंगा, सर्व देवमया हरि '*** २ गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, ***'नास्ति गंगा समं तीर्थ, न देव केशवात्पर'*** ३

प्राचीनकाल में गंगा को धार्मिक दृष्टि से परम कल्याणकारक, मोक्षदायिनी, पापनाशिनी, कष्ट निवारिणि, परम श्रद्धेय देवी के रूप में देखा गया है–

' देवी सुरेश्वरी भगवती गंगे त्रिभुवनवारिणी तरल तरंगे।
शंकर मौलि विहारिणी विमले मनमति रास्तां तव पदकमले ।। ' ४

तुलसीदास जी ने गंगा की महिमा अपरम्पार बताई है–

'देवनदी कहं जो जन जान किए मनसा कुल कोटि उधारे ।
××× ओक की नींव परी हरिलोक विलोकत गंगा तरंग तिहारी।। ' ५

हिन्दू धर्म में गंगा की व्याख्या अत्यंत पुण्यराशि का तरल प्रवाह, चिरजीवन संजीवनी, अमंगल की विनाशक, भगवान शिव की लीला का महाऐश्वर्य आदि के रूप में वर्णित है–

'समृद्ध सौभाग्यं सकल वसुधायाः किपनि तत,
महेश्वर्य लीला जनित जगतः खण्डपर शोः । '६

मां गंगा की आरती के पश्चात गंगा लहरी का पाठ होता है। हिंदू धर्म में गंगा जल को सर्वोत्तम जल माना गया है इसके अभाव में सभी धार्मिक कार्य अधूरे माने जाते हैं। प्राचीन संस्कृत महाकाव्यों में गंगा जल को पापनाशक एवं कल्याणकारी बताया गया है–

'गंगावारिणि कल्याणकारिणि श्रमहारिणि ।
स मग्नो निवृत्ति पाप पुण्यभारिणि तारिणि। ' ७

भगवान के पूजा विधान में पंचामृत एवं प्रसादादि इसके अभाव में अपूर्ण हैं। महादेव भगवान शिव जी का जलाभिषेक गंगा जल के बिना अधूरा है। गंगाजल की महिमा का बखान ऋषि मुनि और देवता भी करते हैं–

'करिई देव मुनि गण जल गंग बखाना, अंजुलि कलश नीर पूर्ण गंग समाना ।
महापतित तारे निर्मल जल अस्नाना, वांछित वर पावे करि गंगा जल पाना ।'

अर्थात् गंगा नदी के किसी भी हिस्से से निकले हुए जल को, चाहे वह कितनी भी मात्रा में हो, चाहे वह किसी भी पदार्थ (अंजुलि, कलश) में रखा गया हो, अपने आप में सम्पूर्ण है, बिल्कुल मां गंगा की तरह। वह जल हरेक प्रकार से सम्पूर्ण गंगा है।जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से गंगा जल का पान करता है उसकी सारी सदिच्छाएं पूर्ण होती हैं और मां गंगा के निर्मल जल में स्नान करने मात्र से अधम पापी पतित प्राणियों का भी तरण हो जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार कोई भी किसी कूप या धारा से

पात्र में जल लेकर स्नान कर सकता है या बिना जल विधि से भी स्नान कर सकता है । 'नमो नारायण मंत्र' के साथ बुद्धिमान लोगों को तीर्थ स्थल का ध्यान करना चाहिए और निम्न मंत्र के साथ गंगा का आवाह्न करना चाहिए '

'ॐ नमो भगवती हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे मां पावय पावय स्वाहा।।' ९

किसी भी स्थान पर स्नान के समय गंगाजी के १२ नामों वाला यह श्लोक भी बोला जाता है जिसमें गंगाजी का यह वचन निहित है कि स्नान के समय कोई भी व्यक्ति जहां भी मेरा ध्यान करेगा, में वहीं के जल में मै स्वयं उपस्थित हो जाऊंगी–

'नंदिनी नलिनी सीता मालती च महापगा ।
विष्णुपादासंप्रभुता गंगा त्रिपथगामिनी ।।
भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेश्वरी ।
द्वादशैतजि नमानि यत्र यत्र जलाशये ।।
स्नानोद्यत: स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम् ।।' १०

भारत में प्रत्येक सनातनी हिन्दू के पूजागृह में गंगा जल की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती है क्योंकि धार्मिक आस्था के साथ साथ गंगा जल का वैज्ञानिक महत्व भी है। अनेक पर्यावरणविद् मानते हैं कि गंगा जल में विषाणु रोधक तत्व विद्यमान होते हैं। 'इसमें उपस्थित बेक्टिरियोफेज़ नामक जीवाणु हानिकारक विषाणुओं एवं सूक्ष्म जीवों को नष्ट करने की क्षमता रखता है।'*११* अधिक समय तक सुरक्षित एवं दुर्गन्ध मुक्त बने रहना इसका साक्षात् प्रमाण है।

भारत में अनेक उत्सवों, पर्वों, धार्मिक तिथियों, व्रतों एवं संस्कारों आदि के समय गंगा स्नान, पूजन, दान एवं दर्शन अत्यंत शुभ माना गया है। बैशाख मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को गंगा स्नान एवं पूजन से ऋद्धि सिद्धि, यश, सम्मान की प्राप्ति होती है। इस तिथि को ***गंगा जयंती*** भी कहते हैं मान्यता है कि इस दिन गंगा विष्णु भगवान के अंगूठे से निकलकर ब्रह्मा जी के कमंडल में आईं थीं और उसके बाद शिव जी की जटाओं में । गंगा सप्तमी को लोग अपने- अपने क्षेत्रों में गंगा घाटों पर सवेरे - सवेरे जाकर स्नान करके मां गंगा को दुग्ध स्नान कराते हैं और धूप, दीप, नैवेद्य ,श्रृंगार एवं भोग अर्पण करते हैं । इस दिन मां गंगा की शोभायात्रा भी निकाली जाती है ।

हिंदू धर्म में कन्या के विवाहोपरांत भी गंगा स्नान का विशेष महत्त्व माना जाता है।मान्यता है कि गंगा स्नान करने से विवाह के मांगलिक दोष से ग्रसित जातकों को विशेष लाभ होता है। गंगा स्नान करने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम होता है । धार्मिक आस्था के अनुसार प्रत्येक मास की पूर्णिमा एवं अमावस्या को स्नान और पितरों के निमित्त तर्पण व पिंडदान करने से सद्गति प्राप्त होती है। जनमानस में एक विश्वास यह

भी है कि मरणासन्न व्यक्ति के मुख में यदि गंगा जल की कुछ बूंदे डाल दी जाय तो वह कष्टदायक मृत्यु से शीघ्र मुक्त होकर स्वर्ग को प्राप्त कर लेता है। गंगा किनारे शवों के दाह संस्कार एवं अस्थि विसर्जन तक को शुभ माना जाता है।गंगा जी में प्रत्येक कार्य करने हेतु गंगा के किनारे पर घाट बने होते हैं, जहां पर लोग अपने विभिन्न प्रकार के कार्य पूर्ण करते हैं। हरिद्वार में गंगा नदी के तट पर स्थित कुशावर्त घाट ऐसा ही है,जो कि इंदौर की मराठा रानी देवी अहिल्याबाई होलकर द्वारा बनवाया गया था। यहां व्यक्ति अपने पितरों एवं दिवंगत आत्माओं के श्राद्ध हेतु आते हैं।

स्कन्द पुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि संवत्सर मुखी मानी गई है, क्योंकि यह दिन गंगा का पृथ्वी पर अवतरण का दिन है। गंगा दशहरा पर्व मनाने की परंपरा भी इसी दिन से प्रारंभ हुई थी। गंगा दशहरा पर्व पर स्नान दान का विशेष महत्व है। वराह पुराण के अनुसार ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को बुधवार के दिन मां गंगे स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। वह दस पापों को नष्ट करती है अतः इसे गंगा दशहरा के रूप में जाना जाता है। स्कन्द पुराण एवं वाल्मीकि रामायण के अनुसार इसी दिन महाराज भागीरथ के कठोर तप से प्रसन्न होकर मां गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। मान्यता है कि इस दिन जो भी व्यक्ति गंगा नदी के तट पर अथवा कहीं भी गंगा जल मिलाकर गंगामंत्र का दस बार जाप करता है, तो चाहे वह दरिद्र अथवा असमर्थ हो तो भी गंगाजी की पूजा के पूर्ण फल को प्राप्त कर लेता है। इस दिन मां गंगा जी, शिव जी, ब्रह्मा, सूर्य देवता, भागीरथी तथा हिमालय की प्रतिमा बनाकर दूध, बताशा, रोली,धूप,दीप से से पूजन करके अन्न वस्त्रादि का दान करने से पूर्ण फल प्राप्त होता है।

गंगा नदी के तट पर लगने वाले मेले भी विश्व प्रसिद्ध हैं, इनमें गंगा दशहरा के साथ साथ विश्व का सबसे बड़ा मेला महाकुम्भ भी है। श्रावण सोमवार, गंगा सप्तमी एवं छठ मेले भी गंगा नदी के किनारे पर लगते हैं। यूं कहिए कि,' भारत वर्ष मेलों का देश है। हर गांव, हर कस्बे, हर शहर में वर्ष भर मेलों का आयोजन किया जाता है, इनमें गंगा नदी के किनारे पर लगने वाले मेलों की बात ही कुछ और ही है ।हजारों लाखों ग्रामवासी बरबस ही खींचे चले आते हैं इस नदी के तट पर। ऐसा क्या है गंगा में कि इस वजह से ठंड से ठिठुरते औरतें, बच्चे, बूढ़े डुबकी लगाकर नहाते हैं।' १२

गंगा के धार्मिक महत्व से सीधा साक्षात्कार कुम्भ मेलों के आयोजन के समय होता है। हिंदू धर्म में कुंभ को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। एक सर्वविदित कथा के अनुसार समुद्र मंथन के समय अमृत कलश से छलकी बूंदे जिन स्थानों पर गिरी वहीं - वहीं आज कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार में गंगा के तट पर, प्रयागराज में संगम पर कुंभ मेले में शाही स्नान से लेकर जनमानस के स्नान तक सभी का धार्मिक दृष्टि से अत्यंत

महत्व है। भारत में विभिन्न मठो, अखाड़ों का शाही स्नान विश्व प्रसिद्ध है। मकर संक्रान्ति पर विश्व भर से आए लोग गंगा नदी में स्नान करके अपने आप को सौभाग्यशाली एवं धन्य समझते हैं। मकर संक्रान्ति मेले की सुंदरता का वर्णन प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रा नंदन पंत जी ने कुछ इस प्रकार किया है –

'जन पर्व मकर संक्रान्ति आज,
उमड़ा नहान को जन समाज,
गंगा तट पर सब छोड़ काज,
नारी नर कई कोस पैदल,
आ रहे चले लो दल के दल ,
गंगा दर्शन को पुण्योंज्वल । १३

श्रावण मास में कांवड़ यात्रा का भी विशेष महत्व है। प्रत्येक शिवरात्रि पर लाखों श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने हेतु यात्रा पर निकलते हैं और शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं। श्रावण का महीना शिवभक्तों के लिए विशेष महत्व रखता है। मान्यता है कि श्रावण मास में भगवान शिव अपनी ससुराल राजा दक्ष की नगरी कनखल में निवास करते हैं । शिवभक उन्हें प्रसन्न करने हेतु गंगाजल लेने यहीं पर आते हैं और अपने – अपने क्षेत्रों के शिवालयों में जलाभिषेक करते हैं। भारत के विभन्न क्षेत्रों में लोगों की आस्था गंगा जल एवं भगवान शिव से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। क्षेत्रीय रूप से ये मेले विशेष महत्व रखते हैं।'गुड़गांव के पास इच्छापुरी का प्राचीन शिव मंदिर है जहां वर्ष में दो बार शिवरात्रि का मेला लगता है। यहां कई राज्यों से लाखों की संख्या में श्रद्धालु हरिद्वार, गंगोत्री एवं गोमुख से गंगाजल लाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं।'१४

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में मल्लावां क्षेत्र के बोरिया घाट पर लगने वाला पंचभीका मेला है। यह मेला परिवारों को जोड़ने का माध्यम भी बनता है ।'एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक गंगा जी के घाट पर पांच दिन लगने वाले इस मेले में नए रिश्तों की शुरूआत भी होती' ***१५*** यह मेला पारस्परिक प्रेम एवं सदभावना को भी बढ़ावा देता है।

झारखंड के रामगढ़ मंदिर की अनोखी मान्यता है। इसके बारे कहा जाता है कि यहां के शिवलिंग पर गंगाजल अपने आप गिरता है।'गंगा की धारा का उद्भव कहां से होता है यह कोई नहीं जानता।' यहां उपस्थित हर की पैड़ी घाट को राजा विक्रमादित्य ने अपने भाई भर्तृहरि की याद में बनवाया था। मान्यता है कि भर्तृहरि ने यहां तपस्या की थी। इस घाट को ब्रह्मकुंड के नाम से भी जाना जाता है।' ***१६***

भारत में विभिन्न व्रतों आदि में गंगा–स्नान करके पूजन एवं व्रत परायण किया जाता है। मिथिलांचल की छठ पूजा, कार्तिक मास के स्नान में गंगा–घाट पर पूजन–अर्चन अत्यंत शुभ एवं फलदायक माना गया है। छठ पूजा में महिलाएं कठोर व्रत करके मां गंगे की आराधना करती हुई कहती हैं–।

'मौली चंदन पान सुपारी, खीर ठेकुआ फूल केतारी।
सूप नारियल केला, मंडप गंगा दीपक, कलश हल्दी दूब,
*हे ! छठी मैया, तोहे शत–शत नमन । '*१७

भारत की सर्वाधिक महिमामयी नदी 'गंगा' आकाश, धरती, पाताल तीनों लोकों में प्रवाहित होती मानी जाती है। आकाशगंगा या स्वर्णगंगा,त्रिपथगा, पातालगंगा, हेमवती,भागीरथी, मंदाकिनी, अलकनंदा आदि अनेकों नामों से पुकारी जाने वाली गंगा हिमालय के उत्तरी भाग गोमुख से भागीरथी के रूप में निकलकर देवप्रयाग में अलकनंदा नाम से प्रसिद्ध होती हुई मैदानी क्षेत्रों की गंगा मैया के रूप में परिवर्तित हो जाती है। उत्तर भारत के बड़े भू–भाग को सिंचित करने वाली गंगा यदि न होती तो यह प्रदेश एक विशाल मरुस्थल हुआ होता। राम की सरयू, कृष्ण की यमुना, रतिदेव की चंबल, गजग्राह की सोन नदी, नेपाल की कोसी, गंडक तथा तिब्बत से आने वाली ब्रह्मपुत्र सभी को अपने आप में समेटती हुई गंगा अंत में सुंदरवन के पास बंगाल की खाड़ी में समा जाती है।

इस प्रकार भारत में गंगा सबके लिए एक पवित्र नदी है। यहां तक कि दक्षिण भारत में भी दीपावली के दिन स्नान करने के बाद जब लोग एक दूसरे से मिलते हैं तो पूछते हैं – "***गंगा स्नानम आच्च्रा ?*** अर्थात् क्या आपका गंगा स्नान हो गया ? 'गंगा' नाम अत्यंत पवित्रता का प्रतीक है। गंगा का जल लोगों की धार्मिक भावनाओं एवं आस्था से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है ।

संदर्भ-

1. नृसिंह पुराण,
2. पद्म पुराण खंड 7 अध्याय 4
3. ब्रह्म वैवर्त पुराण, ब्रह्म खण्ड, अध्याय ११, श्लोक १६,
4. गंगा स्तोत्रम- आदिगुरु शंकराचार्य,
5. कवितावली- तुलसीदास,
6. गंगालहरी- पंडित राज जगन्नाथ,
7. कुमारसम्भव- कालिदास,
8. गंगाचालीसा,

International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 4, July-August, 2020, Impact Factor: 5.246

9. भविष्य पुराण,
10. आचार प्रकाश, आचरेंदु पृ-४५,
11. प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण अध्ययन- डॉ गुलवीर शर्मा, पृ- २६,
12. मेला- किशोर कुमार सिन्हा,
13. नहान कविता- सुमित्रा नंदन पंत,
14. नवभारत टाइम्स. कॉम २९ जुलाई २०१९,
15. w w w. Jagaran.com,
16. NDTV.com,
17. www. Your quote.in ।